आर. एन. आई. नं. : RAJHIN/2013/59711

पोस्टल रजि. नं. : बीकानेर/146/2018-20

पशु पालन नए आयाम

वर्ष : 8 अंक : 01 सितम्बर, 2020 मूल्य : ₹2.00

।पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम्।

मार्गदर्शन : कुलपति प्रो. (डॉ.) विष्णु शर्मा

74वें स्वाधीनता दिवस पर वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा द्वारा दिए गए उद्‌बोधन के अंश

देश की आजादी के 74वें पर्व पर मेरी हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं। प्राचीनकाल से विश्व गुरू रहे भारत ने विश्व में एक शक्तिशाली राष्ट्र के रूप में अपनी पहचान कायम की है। यह देश वीर प्रसूताओं की भूमि है। देश के स्वतंत्रता आंदोलन में अपने प्राणों को न्यौछावर करने वाले स्वतंत्रता सेनानियों, अमर शहीदों और आजादी के दीवानों के कड़े संघर्ष और बलिदान की बदौलत आज हम इस मुकाम तक पहुँचे हैं। आज का यह पावन पर्व उनके स्मरण और कृतज्ञता का दिन है। उनकी शहादत को सलाम करते हुए हम संकल्प लें कि इस देश की आजादी, एकता और अखंडता को अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए सदैव तत्पर रहेंगे। एक मजबूत, सुखी और समृद्ध भारत के लिए हम प्राण–प्रण से जुटे रहेंगे। राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर अपनी स्थापना के दस वर्ष की उपलब्धि और सुनहरा सफर पूरा करके नए दशक में प्रवेश कर गया है। विश्वविद्यालय प्रशासन की नई पहल और दृढ़ निश्चय तथा विद्यार्थियों, शिक्षकों, कर्मचारी और अधिकारियों की सकारात्मक सहभागिता ने विश्वविद्यालय को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाया है। विश्वविद्यालय में प्रशासनिक एवं वित्तीय अधिकारों के विकेन्द्रीकरण, मानव संसाधन और सुविधाओं का पूरा उपयोग, अतिरिक्त आय सृजन, ई सुशासन को प्रभावी तरीके से लागू करके सफलता के सोपान तय किये गए। विश्वविद्यालय को ई–गर्वनेन्स राजस्थान अवार्ड प्रदान कर सर्वोत्कृष्ट कार्य को सराहा गया है। राज्य सरकार के निर्देशानुसार 4 हजार किसानों व पशुपालकों को वेटरनरी विश्वविद्यालय में उन्नत पशुपालन का प्रशिक्षण दिया जाएगा। विश्वविद्यालय के दशाब्दी वर्ष में डिकेड इनीशिएटिव के तहत उल्लेखनीय उपलब्धियां अर्जित की गई हैं। हमारे अनुसंधान व पशु उत्पादों को जैविक मोड पर लाए जाने और पैटेन्ट करवाने का कार्य किया जा रहा है। अर्न्तराष्ट्रीय प्रमाणीकरण और राजस्थान जैविक प्रमाणीकरण संस्थाओं के माध्यम से उपजाऊ भूमि और गाय–बकरियों को इसमें शामिल किया गया है। इस वर्ष राजुवास परिसर में विद्यार्थियों के लिए जिम्नेजियम और परीक्षा भवन का निर्माण कर अतिथि गृह व फैकल्टी हाउस का पुनरूद्धार किया गया है। राज्य के 19 जिलों में विश्वविद्यालय द्वारा पशुचिकित्सा सेवाएं, उन्नत पशु व वैज्ञानिक पशुपालन के प्रशिक्षण का कार्य पूरी शिद्दत के साथ किया जा रहा है। 14 जिलों के 16 हजार किसान–पशुपालकों को ऑनलाइन राजुवास से जोड़ा गया है। इस वर्ष ग्रामीण क्षेत्र में 989 पशुपालन शिविरों का आयोजन कर 25 हजार से भी अधिक पशुपालकों को लाभान्वित किया गया। हैरिटेज जीन बैंक के तहत 3 हजार उन्नत नस्ल के बछड़े–सांड प्रगतिशील पशुपालक व गौशालाओं को सुलभ करवाए गए। देश के ख्यातनाम संस्थानों से इस वर्ष 8 आपसी करार कर पशुचिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान कार्यों में सहयोग का एक नया आयाम स्थापित किया गया। कोविड–19 के मद्देनजर वर्चुअल क्लास, अध्ययन के साथ–साथ 6 ऑनलाइन वेबिनार और सतत पशुचिकित्सा शिक्षा के 4 प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए। स्मार्ट विलेज इनिशिएटिव के तहत गोद लिए गांव जयमलसर में एक हजार एक पौधों का वितरण कर ग्रामीणों को गांव को हरा–भरा बनाने के लिए प्रेरित किया गया। गांव के तालाब का पुर्नरूद्धार कार्य, नेत्र जांच, स्वास्थ्य चिकित्सा शिविर और महिलाओं को ब्यूटी पार्लर के प्रशिक्षण शिविर आयोजित किये गए। हमारा निरंतर प्रयास है कि विकास की गति को बनाए रखकर आमजन की अपेक्षाओं के अनुरूप पशुचिकित्सा क्षेत्र के सुदृढ़ीकरण में अपना योगदान देते रहें। राज्य का एकमात्र वेटरनरी विश्वविद्यालय देश और दुनिया के शीर्ष विश्वविद्यालयों में अपना स्थान बनाए, इसी संकल्प के साथ कार्य कर रहे हैं। वेटरनरी विश्वविद्यालय के बढ़ते आकार और जिम्मेदारियों का निर्वहन पूर्ण ईमानदारी, निष्ठा और मेहनत से करने की जरूरत है। राजुवास को देश और दुनिया में एक उत्कृष्ट संस्थान के रूप में स्थापित करने का संकल्प लेकर आगे बढ़ेंगे। अमर शहीदों के पुण्य स्मरण के साथ, स्वाधीनता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं और बधाई देता हूँ। जय हिन्द !

किसी देश की महानता का आंकलन इस बात से किया जा सकता है कि लोग पशुओं से कैसा व्यवहार करते हैं।

–महात्मा गांधी

विश्वविद्यालय समाचार

माननीय राज्यपाल एवं कुलाधिपति के निर्देशानुसार राजुवास में सघन पौधारोपण अभियान के तहत 5100 पौधे किए रोपित

स्वाधीनता दिवस पर माननीय राज्यपाल एवं कुलाधिपति के निर्देशानुसार वेटरनरी विश्वविद्यालय मुख्य परिसर बीकानेर सहित राज्य के 19 जिलों में स्थित संस्थानों और संस्थाओं में 5100 पौधे रोपित कर सघन पौधारोपण किया गया। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा ने अशोक का पौधा लगाकर पौधारोपण कार्यक्रम की शुरूआत की। पौधारोपण कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के कर्मचारियों, शिक्षकों व अधिकारियों ने बड़े उत्साह से शामिल होकर नीम, करंज, अशोक, शीशम के पौधे रोपित किए एवं इनकी नियमित देखभाल एवं रक्षा का प्रण लिया। कुलपति ने पौधारोपण कार्यक्रम की सफलता और भविष्य में देखरेख के लिए 6 सदस्यीय समिति का भी गठन किया है। सघन पौधारोपण अभियान के तहत राजुवास के बीकानेर परिसर में शिक्षकों, अधिकारियों और कर्मचारियों ने विभिन्न विभागों और इकाईयों में 500 पौधे रोपित किये। स्नातकोत्तर पशुचिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान, जयपुर व वेटरनरी कॉलेज, नवानियां, उदयपुर में 500–500 पौधे रोपित किये गए। प्रसार शिक्षा निदेशालय के तहत राज्य के 14 जिलों में स्थित पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्रों पर 800 पौधे तथा अनुसंधान निदेशालय के अंतर्गत 8 पशुधन अनुसंधान केन्द्रों पर 2 हजार 500 पौधे रोपित किये गए। राज्य में तीन सम्बद्ध निजी महाविद्यालय में भी 100–100 पौधे रोपित किये गए।

एंथ्रोपोसीन युग में एनिमल प्रोडक्शन मेडिसिन विषय पर राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन

वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा वेटरनरी इंटरनल एवं प्रिवेंटिव मेडिसिन सोसाइटी एवं इंटास एनिमल हैल्थ के संयुक्त तत्वावधान में 14 अगस्त, 2020 को "एंथ्रोपोसीन युग में एनिमल प्रोडक्शन मेडिसिन" विषय पर राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा ने कहा कि जूनोटिक बीमारियों के कारण आज पशुचिकित्सकों का महत्व बढ़ गया है। हमें समग्र अप्रोच के माध्मय से पशुओं से मनुष्यों में फैलने वाली बीमारियों को नियंत्रित करना होगा। वेबिनार के मुख्य वक्ता वेटरनरी विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति एवं राज्यपाल सलाहकार समिति के सदस्य प्रो. ए. के. गहलोत ने बताया कि 75 प्रतिशत जूनोटिक बीमारियों का उद्भव पशुओं से होता है। इसलिए आज के युग में प्रोडक्शन मेडिसिन की महत्ता बढ़ गई है। पशु औषधीय उत्पादन और पशु स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए ही हम मनुष्य के स्वास्थ्य के रक्षा कर सकते हैं। आयोजन सचिव डॉ. दीपिका धूड़िया ने बताया कि वेबिनार में देश के विभिन्न राज्यों के 788 पशुचिकित्सकों एवं पशु औषध विज्ञान विशेषज्ञों ने हिस्सा लिया। सोसाइटी के महासचिव डॉ. अशोक कुमार ने अतिथियों का स्वागत किया।

देशी गौवंश में आनुवांशिकी आधार पर उत्पादन क्षमता बढ़ाने पर होगा कार्य

राष्ट्रीय पशु आनुवांशिक संसाधन ब्यूरो (एन.बी.ए.जी.आर.), करनाल और वेटरनरी विश्वविद्यालय देशी गौवंशीय पशुओं में आनुवांशिक आधार पर दुग्ध उत्पादन क्षमता को बढ़ाने के लिए मिलकर कार्य करेंगे। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा की अध्यक्षता में 17 अगस्त को आयोजित एक बैठक में इस बाबत सहयोग और समन्वय पर सहमति बनी। कुलपति प्रो. शर्मा ने कहा कि राजस्थान में देश का विख्यात देशी गौवंश बहुतायत में पाया जाता हैं। जिन पर विश्वविद्यालय के 8 पशु अनुसंधान केन्द्रों पर अनुसंधान और विकास कार्य किए जा रहे हैं। राठी, थारपारकर, साहीवाल, कांकरेज, गिर और मालवी देशी गौवंश यहां की हैरिटेज धरोहर है। आनुवांशिकी आधार पर संयुक्त रूप से अध्ययन के नतीजों से पशुओं की उत्पादन क्षमता में अभिवृद्धि की जा सकेगी। बैठक में राष्ट्रीय पशु आनुवांशिक संसाधन ब्यूरो करनाल के निदेशक डॉ. आर.के. विज ने कहा कि आनुवांशिकी से देशी गौवंश की उत्पादन क्षमता बढाए जाने की राष्ट्रीय परियोजना पर कार्य हो रहा है। ब्यूरो देशी गौवंश के जीनोटाइप डाटा और नस्लों के सर्वे अध्ययन को वेटरनरी विश्वविद्यालय से साझा कर देशी नस्लों के विकास में अपना अभूतपूर्व योगदान कर सकता हैं। बैठक में इसके लिए वेटरनरी विश्वविद्यालय में एक समन्वय केन्द्र बनाने पर सहमति व्यक्त की गई।

यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पोन्सिबिलिटी
जयमलसर गांव में कम्प्यूटर साक्षरता केन्द्र का शुभारंभ

वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पोन्सिबिलिटी के तहत गांव जयमलसर में 29 अगस्त को कम्प्यूटर साक्षरता केन्द्र विधिवत शुरू हो गया। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा ने केन्द्र का उद्घाटन करते हुए कहा कि आज का युग कम्प्यूटर का युग है। हर क्षेत्र में विद्यार्थियों और युवाओं के लिए कम्प्यूटर का ज्ञान आवश्यक हो गया है। इस केन्द्र के माध्यम से गांव में इच्छुक विद्यार्थी, युवा व ग्रामीणों को कम्प्यूटर साक्षर बनाने का लक्ष्य हासिल किया जाएगा। कुलपति प्रो. शर्मा ने गांव के सर्वांगीण विकास कार्यों में ग्रामीणों की सक्रिय भागीदारी का आह्वान किया। नॉडल अधिकारी व प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. आर.के. धूड़िया ने बताया कि केन्द्र द्वारा कम्प्यूटर साक्षरता का कार्य शुरू हो गया है तथा गांव के 48 विद्यार्थियों को कम्प्यूटर साक्षरता केन्द्र पर पंजीकृत किया गया। गांव के पूर्व सरपंच पवन रामावत ने गांव में एक अच्छी शुरूआत के लिए सभी का आभार जताया। इस अवसर पर राजुवास के वित नियंत्रक अरविंद बिश्नोई, वेटरनरी कॉलेज के अधिष्ठाता प्रो. आर.के. सिंह, पी.जी.आई.वी.ई.आर.,जयपुर की अधिष्ठाता प्रो. संजीता शर्मा, समन्वयक डॉ. नीरज कुमार शर्मा, सीनियर स्कूल के प्राचार्य रामकिशोर सहित कृपालदान चारण व गांव के प्रबुद्धजन मौजूद थे।

वेटरनरी विश्वविद्यालय एक्ट के नियम-परिनियमों को राज्यपाल की मंजूरी

वेटरनरी विश्वविद्यालय के नियम और परिनियमों को राज्यपाल एवं कुलाधिपति श्री कलराज मिश्र ने स्वीकृति प्रदान की है। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा ने इसके लिए माननीय राज्यपाल का आभार जताया है। प्रो. शर्मा ने बताया कि राजस्थान पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय एक्ट–2010 विधानसभा में पारित किया गया। विश्वविद्यालय ने एक्ट के तहत नियम–परिनियम बनाकर राज्य सरकार को प्रेषित किए। अब इन नियमों और परिनियमों को राज्य सरकार की सहमति के बाद माननीय राज्यपाल की स्वीकृति मिल गई हैं। कुलपति प्रो. शर्मा ने बताया कि राज्य का एक मात्र वेटरनरी विश्वविद्यालय विशिष्ट श्रेणी का है। अपने नियम और परिनियमों के लागू होने से प्रशासनिक व वित्तीय कार्यप्रणाली का सुचारू संचालन हो सकेगा। एक्ट के नए नियम–परिनियम शैक्षणिक, अनुसंधान व प्रसार गतिविधियों को सुगमता से लागू करने में मददगार होंगे।

लोकल एवं ग्लोबल ज्ञान और नवाचार से नई शिक्षा नीति के उद्धेश्यों का क्रियान्वन पर राष्ट्रीय वेबिनार

वेटरनरी विश्वविद्यालय के संगठक महाविद्यालय पी.जी.आई.वी.ई.आर. जयपुर द्वारा 29 अगस्त को पशुधन नवाचार, ज्ञान और उद्यमिता कौशल केन्द्र के तत्वावधान में लोकल एवं ग्लोबल ज्ञान और नवाचार से नई शिक्षा नीति के उद्धेश्यों को क्रियान्वित करने के विषय पर राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन किया गया। वेबिनार की अध्यक्षता करते हुए विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा ने कहा कि नई शिक्षा नीति में आज का विषय अत्यंत सामयिक है। इससे पशुचिकित्सा विद्यार्थियों में स्थानीय और वैश्विक ज्ञान के प्रति नए दृष्टिकोण का निर्माण हो सकेगा। वेबिनार के मुख्य वक्ता पदमश्री पुरस्कृत, आई.आई.एम., अहमदाबाद के सेवानिवृत्त प्रो. अनिल कुमार गुप्ता ने कहा कि हमारे देश में पशुपालन व कृषि के क्षेत्र में हमारे पुरखों के औपचारिक ज्ञान और कौशल को आधुनिकतम तकनीक के साथ सम्मिश्रण करने की आवश्यकता है। पी.जी.आई.वी.ई.आर. जयपुर की अधिष्ठाता प्रो. संजीता शर्मा ने विषय का प्रवर्तन कर अतिथियों का स्वागत किया। आई.सी.ए.आर. नॉडल अधिकारी प्रो. सुनील मेहरचंदानी ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

डेयरी पशुओं में महत्ती उपापचयी रोगों पर राष्ट्रीय वेबिनार

वेटरनरी विश्वविद्यालय के पी.जी.आई.वी.ई.आर., जयपुर में वेटरनरी इंटरनल एवं प्रिवेटिव मेडिसिन सोसाइटी एवं इंटास एनिमल हैल्थ के संयुक्त तत्वावधान में 27 अगस्त, 2020 को डेयरी पशुओं में महत्ती उपापचयी रोगों पर राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा ने कहा कि कोविड–19 के दौर में लोगों में अच्छे स्वास्थ्य और रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने वाले खाद्य उत्पादों की मांग है, इसमें पशुचिकित्सकों की अहम भूमिका है। डेयरी पशुओं में उपापचयी रोगों के निवारण हेतु क्लिनिकल उपचार के साथ–साथ पोषण संबंधी जरूरतों को भी पूरा करना होगा। वेबिनार के मुख्य वक्ता महाराष्ट्र एनीमल एवं फिशरीज साईंस यूनिवर्सिटी, नागपुर के निदेशक (अनुदेशन) एवं पूर्व डीन संकाय प्रो. ए. समद ने डेयरी पशुओं में होने वाली उपापचयी रोग किटोसिस, हीमोग्लोबिन्यूरिया, हाइपोफास्पोटिमिया होने के कारणों एवं बचाव के बारे में विस्तृत जानकारी दी। पी.जी.आईवी.ईआर., जयपुर की अधिष्ठाता प्रो. संजीता शर्मा ने वेबिनार के विषय को सामयिक बताते हुए उसके महत्व को रेखांकित किया। आयोजन सचिव डॉ. धर्मसिंह मीणा ने सभी का स्वागत किया।

पोल्ट्री क्षेत्र में उद्यमिता के अवसर पर राष्ट्रीय वेबिनार

वेटरनरी कॉलेज, नवानियां, उदयपुर के पशुधन नवाचार, ज्ञान और उद्यमिता कौशल (लाइक्स) केन्द्र द्वारा पोल्ट्री क्षेत्र में उद्यमिता के अवसर विषय पर राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन 28 अगस्त को किया गया। इस वेबिनार की अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा ने वर्तमान परिप्रेक्ष्य में पोल्ट्री क्षेत्र में उद्यमिता के अवसर पर प्रकाश डाला और बताया कि पशुचिकित्सकों एवं विद्यार्थियों को स्वयं को एक सफल उद्यमी के रूप तथा पशुपालकों तथा शिक्षित ग्रामीण बेरोजगार युवाओं को भी पोल्ट्री क्षेत्र में प्रशिक्षण के माध्यम से उद्यम प्रारंभ करना चाहिए। राष्ट्रीय वेबिनार के अतिथि वक्ता प्रो. पी.के. शुक्ला, कुलसचिव, दुवासु, मथुरा एवं पूर्व संयुक्त आयुक्त (पोल्ट्री) भारत सरकार ने इस क्षेत्र में उद्यमिता के विभिन्न अवसरों और संभावनाओं पर अपना ऑनलाइन प्रस्तुतिकरण दिया। पशुचिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान, जयपुर की अधिष्ठाता प्रो. संजीता शर्मा, आईसीएआर नॉडल ऑफिसर प्रो. सुनील मेहरचन्दानी, महाविद्यालय अधिष्ठाता प्रो. राजीव कुमार जोशी ने भी अपने विचार व्यक्त किये। महाविद्यालय लाइक्स केन्द्र के प्रभारी अधिकारी, डॉ. शिव शर्मा ने बताया कि इस राष्ट्रीय वेबिनार में 1587 प्रतिभागियों ने ऑनलाइन प्लेटफॉर्म के माध्यम से पंजीकरण कराया।

पशुपालक प्रशिक्षण समाचार

वी.यू.टी.आर.सी., रतनगढ़ (चूरू)

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, चूरू द्वारा 11, 18, 24 एवं 29 अगस्त को आयोजित ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 43 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वी.यू.टी.आर.सी., सूरतगढ (श्रीगंगानगर)

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सूरतगढ द्वारा 7, 14, 17, 19 एवं 24 अगस्त को आयोजित ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 107 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वी.यू.टी.आर.सी., सिरोही

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सिरोही द्वारा 13, 18, एवं 21 अगस्त को आयोजित ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 44 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वी.यू.टी.आर.सी., बाकलिया (नागौर)

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, बाकलिया – लाड़नू द्वारा 10, 14, 21, 24, 26 एवं 28 अगस्त को आयोजित ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 107 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वी.यू.टी.आर.सी., कुम्हेर (भरतपुर)

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर) द्वारा 7, 14, 17, 24 एवं 25 अगस्त को आयोजित ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 77 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वी.यू.टी.आर.सी., टोक

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, टोंक द्वारा 6, 11 एवं 18 अगस्त को आयोजित ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 54 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वी.यू.टी.आर.सी., धौलपुर

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, धौलपुर द्वारा 14, 18, 21, 24 एवं 26 अगस्त को आयोजित ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविर में 113 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वी.यू.टी.आर.सी., लूनकरणसर (बीकानेर)

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, लूनकरणसर (बीकानेर) द्वारा 7, 11, 17 एवं 24 अगस्त को ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन प्रशिक्षण शिविरों में 78 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वी.यू.टी.आर.सी., कोटा

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, कोटा द्वारा 5, 11, 14, 17, 19, 22 एवं 25 अगस्त को आयोजित ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 170 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वी.यू.टी.आर.सी.,बोजुन्दा (चित्तौड़गढ़)

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, बोजुन्दा (चित्तौडगढ़) द्वारा 11, 14, 18, 20, 22, 25 एवं 27 अगस्त को ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में 103 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वी.यू.टी.आर.सी., अजमेर

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, अजमेर द्वारा 6, 13, 20, 25 एवं 27 अगस्त को आयोजित ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 99 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वी.यू.टी.आर.सी., झुंझुनूं

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, झुंझुनं द्वारा 18, 19 एवं 24 अगस्त को आयोजित ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 55 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वी.यू.टी.आर.सी., डूंगरपुर

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, डूंगरपुर द्वारा 14, 19, 24 एवं 27 अगस्त को ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन प्रशिक्षण शिविरों में 66 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वी.यू.टी.आर.सी., जोधपुर

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, जोधपुर द्वारा 14, 17, 19, 24 एवं 26 अगस्त को ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन प्रशिक्षण शिविरों में 84 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर (हनुमानगढ़)

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर जिला हनुमानगढ़ द्वारा 10–11, 18, 19 21–22 एवं 24–27 अगस्त को प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 110 किसानों ने भाग लिया।

बरसात के दौरान पशु प्रबन्धन

देश का लगभग हर किसान मवेशी भैंस, भेड़, बकरी, घोड़ा और सूअर सहित पशुओं को पालता है। पशुधन पालन के लिए पशुओं को खराब मौसम से बचाने की आवश्यकता होती है। बारिश के मौसम में पशुओं की सुरक्षा अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि यह किसानों को खेत के उत्पादन के रखरखाव के माध्यम से आर्थिक लाभ प्रदान करता है। बरसात के मौसम के दौरान पशुधन मालिकों की कुछ सामान्य समस्याएं और उनके समाधान इस प्रकार है:

शैड में पानी का रिसाव :– पशु शैड में पानी का रिसाव पशुओं के आराम को प्रभावित करता है। यदि शैड पर्याप्त रूप से साफ नहीं होता है तो अमोनिया जैसे रसायन शैड के अन्दर बढ़ने पर पशु की आंखों को प्रभावित करता है। पानी के रिसाव के कारण कोकसीडोसिस भी हो सकता है। बकरी को खुर सड़ने की बीमारी को रोकने के लिए बकरी के खुरों को पानी से दूर रखने की आवश्यकता होती है।

नमी:– जमीन पर मौजूद नमी से बहुत सारे जीवाणु पैदा होते हैं जो बीमारियों का कारण बन सकते है। कीड़े ज्यादातर बारिश के मौसम में देखे जाते है।

चींचड़ की समस्या:– बारिश के मौसम में टिक्स तेजी से फैलते हैं वे गायों का खून चूसते है और अंततः थीलेरिओसिस नामक बीमारी के कारण उनकी मृत्यु हो सकती है। बारिश के मौसम में मक्खियां भी बढ़ी हुई संख्या में पाई जाती है जिनमें से कुछ मक्खियां घातक होती है उदाहरण (टिस्सी–टिस्सी मक्खियां) ये मक्खियां गायों में नागाना बीमारी फैलाती है जिसके कारण अगर इलाज न हो तो गायों की मौत हो सकती है।

थनैला रोग:– इस मौसम में अधिकतर पशु में थन का रोग पाया जाता है। बरसात के मौसम में गंदे शैड्स से थन की सूजन हो सकती है जिसमें थन का फाइब्रोसिस हो सकता है और दूध का निकलना या तो बंद हो जाता है या दूध में पाए जाने वाले गुच्छे बन जाते है।

कवक चारा:– यह क्षतिग्रस्त छत से बारिश के पानी के रिसाव के कारण चारा गीला हो जाता है तो उसमें कवक विकसित हो जाता है। अगर यह कवक युक्तचारा पशुओं को खिलाया जाता है तो ये कैंसर का कारण बन सकता है।

फिसलन वाली फर्श:– कंकड़ के साथ फिसलन वाली फर्श की भी जांच होनी चाहिए क्योंकि कंकड़ पशुओं के खुरों के बीच अटक जाते है और फिसलन वाली फर्श से पशु फिसल सकते है जिससे उनको चोट लग सकती है।

जठरांत्र संबंधी परजीवी :– अस्वच्छ फर्श के कारण पशुओं में जठरांत्र सबंधी परजीवी होने की संभावना होती है नियमित रूप से परजीवी को रोकने की दवा देना ही बेहत्तर होता है।

बरसात के मौसम की समस्याओं के आवश्यक निवारक उपाय:– पशुधन शैड की छत को लीक–प्रूफ और साफ करें। पशुधन मालिकों को बरसात के मौसम में नयी हरी घास को खिलाने से पहले इसे धूप में सुखाना चाहिए, यह घास में पानी को कम कर देगा और यह एक अच्छे चारे में बदल जाएगा। बारिश के मौसम की शुरूआत के साथ–साथ पूरे मौसम में कृमि को मारने की दवा देनी चाहिए क्योंकि इस अवधि के दौरान कृमि अधिक मात्रा में होते है। किसानों को अपने पशुओं को बाहरी परजीवी को हटाने के लिए नियमित रूप से स्प्रे करना चाहिए और शैड के पास सभी झाड़ियों को काटना चाहिए। नियमित रूप से कीटाणुनाशक का उपयोग करके खेत को कीटाणु रहित किया जाना चाहिए। यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि चारा एक सूखी जगह में संग्रहित हो। इसलिए बरसात के मौसम में होने वाली उपरोक्त समस्याओं और उनके निवारक उपायों को पशुधन मालिक द्वारा ध्यान में रखा जाना चाहिए ताकि पशुओं को खराब मौसम की स्थिति के कारण तनाव से बचाया जा सके, इस प्रकार के छोटे–छोटे उपाय किसान की समृद्धि के लिए एक वरदान साबित हो सकते है।

–डॉ. हिना अशरफ वाईज,
सहायक प्राध्यापक, वेटरनरी कॉलेज, नवानियां (उदयपुर)

पशुओं में परजीवी रोगों का प्रबंधन

पशुपालक भाईयों, सितम्बर माह में कुछ स्थानों को छोडकर मानसून विदा होने लगता है। राज्य में इस बार अच्छी वर्षा होने से पूरे राज्य में पर्याप्त नमी है, साथ ही वर्षा खत्म होने पर वातावरण का तापमान भी बढ़ जाता है। अतः नमी व गर्म वातावरण में बाह्य परजीवियों का प्रजनन तेजी से होता है और पशुओं में इन बाह्य परजीवी जैसे जूं, चींचड़ आदि का प्रकोप बढ़ जाता है। ये बाह्य परजीवी कई प्रकार के रक्त परजीवी जैसे थाईलेरिया, बबेसिया इत्यादि के संवाहक होते है जो कि पशुओं के स्वास्थ्य पर विपरीत असर डालते हैं। बाह्य परजीवी व रक्त परजीवियों से पशुओं में खून की कमी, उत्पादन में कमी, कमजोरी इत्यादि सामान्य लक्षण होते हैं। रक्त परजीवी रोगों (थाईलेरिया, बबेसिया इत्यादि) से पशुओं की मौत भी होती है और छोटे पशुओ में मृत्युदर काफी अधिक होती हैं। पशुपालक भाईयों को यह ध्यान देना चाहिए कि चींचड़ इत्यादि बाह्य परजीवी रात के समय काफी क्रियाशील रहते हैं और पशु का रक्त चूस कर दिन के समय पशु का शरीर छोड़ कर पशुघर व बाड़े में छुप जाते हैं जिससे पशुपालक को स्थिति का सही आंकलन नहीं होता और पशु लगातार कमजोर होता जाता है। अतः इस माह पशुपालकों को पशुओं के स्वास्थ्य प्रबंधन हेतु निम्न बातों पर ध्यान देना चाहिए–

1. चींचड़, जू इत्यादि को नियंत्रित करने के लिए पशुचिकित्सक की देखरेख में दवा के घोल अथवा टीके का उपयोग करें। चूंकि यह दवाईयां जहरीली होती है। अतःइनके उपयोग में सावधानी बरते व बच्चों को इन दवाईयों से दूर रखें।
2. पशुघर व बाड़े में भी समय–समय पर बाह्य परजीवी नाशक दवाईयों का छिड़काव करें।
3. थाईलेरिया, बबेसिया जैसे रक्त परजीवियों द्वारा उत्पन्न रोग के लक्षणों के आधार पर पहचान कर पशुचिकित्सक से तुरन्त ईलाज करायें। पशु को तेज बुखार आना, पेशाब के रंग में परिवर्तन, दुग्ध उत्पादन में भारी कमी इत्यादि इन रोगों के मुख्य लक्षण है।
4. पशुघर व बाड़े में साफ–सफाई रखें। घर में गंदा पानी एकत्र न होने दें व पशुओं को अन्य बीमार पशुओं के सम्पर्क में न आने दें।

–प्रो. ए.के. कटारिया
पूर्व प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर, राजुवास (मो. : 9460073909)

बारिश में पशुओं को सताते रोग

जैसा कि हम जानते हैं कि हमारे देश में मानसून यानि बरसात का मौसम चल रहा है। इस दौरान वातावरण में नमी बढ़ जाती है तथा तापक्रम भी काफी विभिन्नता लिए होता है। अतः इस गर्म तथा नमी वाले मौसम का प्रभाव हमारे पालतू पशुओं पर काफी देखने को मिलता है। नमी की वजह से सूक्ष्म कीटाणुओं जैसे कि जीवाणु, वायरस, कृमि तथा फफूंद को भी पनपने का मौका मिल जाता है। अतः इस वातावरण में पशु अनेक प्रकार के रोगों से ग्रसित हो जाता है इनमें से कुछ प्रमुख रोग व उनसे बचाव हमारे पशुपालक भाई व बहन कर सकते हैं :–

लंगड़ा बुखार (बी.क्यू)

यह रोग क्लोस्ट्रिडियन नामक जीवाणु से होता है। इस रोग में पशु खाना पीना छोड़ देता है तथा पिछली टांगों से लंगड़ा कर चलने लगता है। पशु के शरीर का तापमान बढ़ जाता है। पशु बैचेन हो जाता है, कमजोरी महसूस करता है। पशु को खड़ा होने में भी दिक्कत होने लगती है। उसके पिछले पैरों की मांस पेशियों में खड़खड़ाहट वाली आवाज आने लगती है।

उपचारः– उपचार हेतु पशु चिकित्सक की सलाह पर एन्टीबायोटिक के टीके तथा सूजन व दर्द कम करने के टीके लगवाएं तथा पशु चिकित्सक से उचित इलाज करवाएं।

बचावः– इस रोग से बचाव हेतु बरसात के मौसम से पहले यानि मई–जून के महीने में बी.क्यू का टीकाकरण करवा लें तो इस रोग से पशुओं को बचाया जा सकता है।

गलघोंटू (एच.एस)

गलघोंटू भी एक जीवाणु द्वारा होने वाला मुख्य रोग है जो कि ज्यादातर भैंसों में पाया जाता है, परन्तु कभी कभार गायों में भी देखने को मिलता है। गर्म तथा नम वातावरण जीवाणुओं के लिए अनुकूल परिस्थितियां हैं, वे तेजी से पनपने लगते हैं तथा पशु को अपनी चपेट में लेने के बाद तेजी से बढ़ते हैं। पशु को तेज बुखार आता है तथा भैंस के गले में सूजन तथा सांस लेने में कठिनाई होने लगती है। सांस रूकने लगता है व समय पर उपचार न मिलने पर पशु की मृत्यु हो जाती है।

उपचारः– शुरूआती लक्षण दिखते ही पशु चिकित्सक की सलाह लें तथा तुरन्त उपचार करवाएं।

बचावः– गलघोंटू से बचाव हेतु वर्षा ऋतु शुरू होने से पूर्व एच.एस. से बचाव के टीके नजदीकी पशु चिकित्सालय में सभी पशुओं को लगवाएं।

आन्तरिक एवं बाह्य परजीवी

नम वातावरण में अन्तः एवं बाह्य परजीवी के अण्डे अचानक से अनूकुल वातावरण मिलते ही पनपने लगते है तथा पशुओं को अपनी चपेट में ले लेते है। इन कृमि की वजह से पशुओं की रोग प्रतिरोधक क्षमता कम हो जाती हैं क्योंकि ये परजीवी पूर्णतः पशु के रक्त को चूसते हैं। ये परजीवी दो प्रकार के होते हैं–

- **बाह्य परजीवी :** चीचड़, जूं, किलनी इत्यादि जो कि पशु के शरीर की बाह्य चमड़ी पर पाये जाते है।
- **अन्तःपरजीवी :** गोलकृमि, फीता कृमि तथा अन्य पेट के कीड़े जो कि पशु की आन्तों में चिपके रहते है तथा पशु की कोशिकाओं से भोजन प्राप्त करते हैं।

पशुओं में इन परजीवियों के कारण कमजोरी, थकान, सुस्ती, खून की कमी तथा अन्य लक्षण जैसे कि रोग प्रतिरोधक क्षमता कम होना व दूध उत्पादन कम होना प्रमुख रूप से है।

उपचारः– पशु चिकित्सक की सलाह पर समय–समय पर (हर तीन महीने में) कृमिनाशक दवाई पिलाते रहें तथा गोबर व खून की जांच प्रयोगशाला में नियमित रूप से करवाते रहें और समय पर उपचार करावें।

बचावः– पशुचिकित्सक की सलाह पर पशुओं को कृमिनाशक घोल नियमित रूप से पिलावें तथा बरसात के मौसम में पशुओं को हरी घास खाने बाहर न भेजे क्योंकि घास पर कृमि के अण्डे होते हैं जो कि पेट में जाकर कृमि उत्पन्न करते हैं।

छोटी माता (स्माल पॉक्स)

यह विषाणु द्वारा होने वाला रोग है। ये रोग मुख्यतः भेड़, बकरियों में होता है इसमें पशुओं के शरीर पर छोटे छोटे दाने हो जाते है तथा पशुओं को तेज बुखार आता है। यह एक बहुत ही तेजी से फैलने वाली बीमारी है। एक पशु में होने पर सभी पशुओं के बीमार होने की पूरी सम्भावना रहती है।

उपचारः– पशुचिकित्सक की सलाह पर लक्षणों के आधार पर उपचार समय पर करवाएं।

बचावः– इस रोग से बचाव हेतु स्माल पॉक्स का टीका सभी भेड़–बकरियों को लगवाएं।

फड़किया रोग (एन्टीरोटोक्सिमीया)

यह बकरियों में पाया जाने वाले जीवाणु जनित रोग है जो कि वर्षा ऋतु में जब चारा–दाना पर्याप्त मात्रा में हो जाता है तब दाना ज्यादा खाने से यह रोग हो जाता है। इसे ओवर हेटिंग डिजिज भी कहते है। इस बीमारी में पशु खाना पीना छोड़ देता है तथा पेट में दर्द से तड़पने लगता है तथा चक्कर खाकर गिर जाता है व खून के दस्त भी कई बार करने लगते है, क्योंकि जीवाणु द्वारा आन्तों मे विष उत्पन्न करने से पशु अवशोषित हो जाता है एवं समय पर उपचार न मिले तो पशु की तुरन्त मृत्यु हो जाती है।

उपचारः– पशु चिकित्सक की सलाह पर उचित एन्टीबायोटिक द्वारा तथा अन्य लक्षण आधारित दवा द्वारा उपचार करवाएं।

बचावः– बचाव हेतु ई.टी का टीकाकरण बरसात से पहले मई–जून के महिने में प्रत्येक बकरी को पशुचिकित्सक की सलाह पर लगवा लें।

बारिश के मौसम में होने वाले रोगों के बचाव हेतु टीकाकरण व दवा के अलावा पशुओं के रख–रखाव का विशेष ध्यान रखें।

- पशुशाला व बाड़ों की नियमित सफाई करें, बाड़ों में नमी नहीं रहनी चाहिए। बाड़े की मिट्टी नियमित रूप से बदलते रहें तथा कीटाणुनाशक घोल का छिड़काव करें।
- पशुओं को खेतों में चरने के लिए न भेजें क्योंकि वर्षा ऋतु में किसान कीटनाशक का इस्तेमाल करते है, उक्त घास खाने से भी पशु बीमार हो जाएगा और कृमि के अण्डे भी पेट में जा सकते है। अतः घर में ही स्वच्छता से कटा हुआ हरा चारा खिलाएं।
- पशुओं के खुर नियमित रूप से लाल दवा के घोल से साफ करें।
- बरसात से पहले पशुचिकित्सालय जाकर पशुचिकित्सक से पशुओं के रोगों के बचाव व टीकाकरण की सलाह अवश्य लें।
- पशुओं को पौष्टिक व सन्तुलित आहार देवें, पशुओं को रोजाना चारे में खनिज लवण का मिश्रण अवश्य देवें।

डॉ. दीपिका धूड़िया
सहायक प्राध्यापक, पशु औषध विज्ञान विभाग, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर

सर्वाधिक सम्भावित पशु रोग पूर्वानुमान–सितम्बर, 2020

पशु रोग	पशु/पक्षी प्रकार	क्षेत्र
मुँह–खुरपका रोग	गौवंश, भैंस, बकरी, भेड़	बांसवाड़ा, भरतपुर, दौसा, श्रीगंगानगर, जयपुर, झुंझुनूं, धौलपुर, सवाई –माधोपुर, अलवर, बून्दी, हनुमानगढ़, चूरू, कोटा, अजमेर, बीकानेर, सीकर
तीन दिन का बुखार	गौवंश, भैंस	जैसलमेर, बाड़मेर, बीकानेर, जयपुर, चित्तौड़गढ़, अलवर, प्रतापगढ़, बांसवाड़ा
पी.पी.आर.	बकरी, भेड़, ऊंट	जयपुर, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, सवाई–माधोपुर, बीकानेर, पाली, सिरोही, बूंदी, बारां
चेचक (माता रोग)	बकरी, भेड़, ऊँट	जयपुर, श्रीगंगानगर, बीकानेर, हनुमानगढ़, चित्तौड़गढ़, जैसलमेर, बाड़मेर, जोधपुर
गलघोंटू	भैंस, गौवंश	हनुमानगढ़, धौलपुर, ज यपुर, सवाई–माधोपुर, दौसा, टौंक, बून्दी, राजसमन्द, पाली, सीकर, चित्तौड़गढ़, श्रीगंगानगर, अलवर, झुंझुनूं, अजमेर
न्यूमोनिक पाश्चुरेलोसिस	गौवंश, भैंस, बकरी, भेड़	सीकर, सिरोही, पाली, जालोर, हनुमानगढ़, जयपुर, कोटा, बीकानेर, श्रीगंगानगर, डूंगरपुर, उदयपुर
ठप्पा रोग	गौवंश, भैंस	हनुमानगढ़, जयपुर, बीकानेर, भीलवाड़ा, पाली, राजसमन्द, प्रतापगढ़, बांसवाड़ा, नागौर
फड़किया रोग	बकरी, भेड़	सवाई–माधोपुर, बाँसवाड़ा, जयपुर, कोटा, सीकर, बीकानेर, श्रीगंगानगर, भीलवाड़ा, बारां, बूंदी, हनुमानगढ़
थाइलेरिओसिस एवं बबेसियोसिस	भैंस, गौवंश	बाँसवाड़ा, बीकानेर, बून्दी, धौलपुर , हनुमानगढ़, चूरू, सवाई– माधोपुर, श्रीगंगानगर, जयपुर, जोधपुर, सीकर, डूंगरपुर, भीलवाडा
सर्रा (तिबरसा)	ऊँट, भैंस	बूंदी, सीकर, श्रीगंगानगर, जयपुर, डूंगरपुर, बांसवाड़ा धौलपुर, हनुमानगढ़
अन्तः परजीवी (गोल–कृमि एवं पर्ण–कृमि)	भैंस, गौवंश, भेड़, बकरी, ऊँट	डूंगरपुर, कोटा, राजसमन्द, बाँसवाड़ा, सवाई –माधोपुर, भरतपुर, बून्दी, धौलपुर, हनुमानगढ़, सूरतगढ़, सीकर, श्रीगंगानगर, भीलवाड़ा, प्रतापगढ़

विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें – प्रो. आर.के. सिंह, अधिष्ठाता, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर, प्रो. सुनील मेहरचन्दानी, प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर एवं प्रो. अन्जु चाहर, विभागाध्यक्ष, जनपादकीय रोग विज्ञान एवं निवारक पशु औषध विज्ञान विभाग, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर।
फोन– 0151–2543419, 2544243, 2201183 टोल फ्री नम्बर 18001806224

सफलता की कहानी

उन्नत तकनीकी से डेयरी उद्योग में सफलता

गांव बरौली धाऊ तहसील कांमा (भरतपुर) के निवासी छोटेलाल (भूतपूर्व सैनिक) पुत्र बृजसिंह का कृषि व पशुपालन में तालमेल उनके जीवन निर्वाह और आय का एक प्रमुख साधन रहा है। छोटेलाल सेवानिवृत होने के बाद से खेती तथा पशुपालन पर ही आश्रित थे, लेकिन पिछले 3–4 वर्षो से पशुपालन पर ही अपना ध्यान केंद्रित किया तथा सार्थक तरीके से अपनाया। इन्होंने पशुपालन द्वारा आजीविका कमाने का निर्णय लिया जो बहुत लाभदायक सिद्ध हुआ। पहले इनके घर में केवल आवश्यकता के अनुसार ही पशुपालन होता था परन्तु समय के साथ–साथ दूध की उपयोगिता एवं बाजार की जरुरत को ध्यान में रखते हुए पशुपालन को डेयरी व्यवसाय के रूप में शुरू किया। छोटेलाल के पास 12 बीघा जमीन है परन्तु उनका कहना है कि जितनी बचत उन्हें डेयरी व्यवसाय से हो रही है, उतनी कृषि से नहीं है। वर्तमान में छोटेलाल के पास 10 भैसे, 3 गाय, 2 बछड़ी तथा 8 पाड़डे/पाड़ियां हैं जिनसे प्रतिदिन 80 लीटर दूध का उत्पादन कर रहे हैं। इस दूध को वे प्रतिदिन 2400 रूपये में बेचकर लगभग 1500 रूपये की बचत प्रतिदिन कर रहे हैं। छोटेलाल बताते हैं कि वे कृषि से भी लगभग 2 लाख रूपये प्रतिवर्ष प्राप्त करते हैं। छोटेलाल समय–समय पर पशुपालन की उन्नत तकनीकों की जानकारी लेने के लिए पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केंद्र, कुम्हेर द्वारा आयोजित प्रशिक्षणों में भी भाग लेते है। वे व्यक्तिगत एवं दूरभाष पर जानकारी व समस्याओं के निवारण हेतु संपर्क में रहते हैं। छोटेलाल ने बीकानेर एवं जयपुर में विश्वविद्यालय के प्रशिक्षणों में जा चुके हैं। इन प्रशिक्षणों से प्राप्त जानकारी एवं उन्नत तकनीकों का डेयरी व्यवसाय में उपयोग किया। प्रशिक्षण से काफी फायदा हुआ है। प्रशिक्षण के दौरान कृमिनाशक दवा का उपयोग, खनिज लवण की उपयोगिता, ग्याभिन पशुओं की देखभाल, दुग्ध उत्पादन में वृद्धि ,कृत्रिम गर्भाधान,संतुलित पशु आहार आदि की जानकारी प्राप्त की। छोटेलाल बताते है कि उन्हें प्रशिक्षण से पशुपालन के क्षेत्र में नवीनतम व उन्नत तकनीकों की जानकारी अन्य पशुपालको को भी देते है। 48 वर्षीय छोटेलाल अपने डेयरी व्यवसाय में सफलता का श्रेय अपने परिवारजनों एवं पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केंद्र, कुम्हेर को देते है। **सम्पर्कः– छोटेलाल, बरौली धाऊ (मो. 9694967916)**

निदेशक की कलम से...

आपदा का मूल्यांकन करके प्रबंधन करना हितकर

प्रिय किसान एवं पशुपालक भाइयों और बहनों!

पशुधन हमारी आजीविका के तौर पर केन्द्रीय भूमिका में माना जाता है। विकासशील देशों में पशुधन को आर्थिक दृष्टि से कमजोर लोगों की ए.टी.एम. के रूप में जाना जाता है। पशुधन उत्पादन और पशु विक्रय करके विपरीत समय में आय अर्जित की जा सकती है। खासतौर पर सूखा, बाढ़, अकाल व अन्य प्राकृतिक आपदाओं से बचाव के लिए बेहतरीन बीमा कहा जा सकता है। मानव जीवन की तरह ही पशुधन भी आपदा से प्रभावित होता है। लेकिन प्राकृतिक आपदाओं के दौरान पशुधन की भी क्षति होती है क्योंकि आपदा प्रबंधन में पशुओं की देखरेख को नगण्य महत्व दिया जाता है। पशुओं के आपदा प्रबंधन में निजी स्तर पर लोगों को पशु आपदा प्रबंधन के लिए जागरूक करने की महत्ती आवश्यकता है। पशु आपदा प्रबंधन में सबसे अच्छा सहयोग वहां के स्थानीय लोगों द्वारा किया जा सकता है। वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर में पशु आपदा प्रबंधन प्रौद्योगिकी केन्द्र की स्थापना की हुई है। आने वाली आपदाओं से पशुओं का बचाव, प्राथमिक चिकित्सा व आपदा में सुरक्षित तौर–तरीकों के लिए समय–समय पर इस केन्द्र द्वारा पशुपालक–किसान प्रशिक्षण कार्यक्रम व कार्यशालाओं का आयोजन किया जाता है। जागरूक पशुपालक इनमें शामिल होने के लिए सम्पर्क कर सकते हैं। हमारे यहां अधिकतर जल व जलवायु जनित और दुर्घटना जनित आपदायें प्रमुखता से होती है। जलवायु व जल जनित आपदाओं में बाढ़, सूखा, गर्म व शीत लहर, बिजली गिरना इत्यादि प्रमुख हैं। दुर्घटना जनित आपदाओं में अग्निकांड, वायु, रेलवे सड़क दुर्घटनाएं, बड़ी इमारतों का ढ़हना, गैस–तेल रिसाव या उत्सव जनित आपदाएं शामिल हैं। हमारे राज्य में पशुधन को तापघात, सूखे या फिर बाढ़ जैसी आपदाओं का सामना करना पड़ता है। तापघात के कारण पशुओं में उत्पादन और प्रजनन में कमी आ सकती है। इससे बचने के लिए चारा खाद्य प्रबंधन और आवास में बदलाव लाना जरूरी है। कम या अनियमित वर्षा वितरण से सूखे की स्थिति पैदा होती है। यह आपदा धीमी गति से शुरू होकर महीनों तक प्रभाव रहता है। चारा उत्पादन में कमी के करण मांग की पूर्ति संभव नहीं हो पाती। अतः हमें पशु चारा क्षेत्र और पशु प्रबंधन रणनीतियां पशुधन को सूखे की चुनौति झेलने में मदद करती है। आपदा का मूल्यांकन करके उसी पर आधारित प्रबंधन कार्यक्रम बनाना चाहिए।

–प्रो. (डॉ.) राजेश कुमार धूड़िया, निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास, बीकानेर (मो. 9414283388)

मुस्कान !

''धीणे री बात्यां''

राजस्थान के समस्त आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारित रेडियो कार्यक्रम

विषय	वार्ताकार	दिनांक व समय
पशुओं की विभिन्न व्याधियों में प्राथमिक चिकित्सा	डॉ. प्रवीण बिश्नोई सह आचार्य वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर	गुरुवार 17 सितम्बर, 2020 सायं 5.30 से 6.00 बजे

मुख्य संपादक
प्रो. (डॉ.) आर. के. धूड़िया
संपादक
डॉ. दीपिका धूड़िया
डॉ. मनोहर सैन
दिनेश चन्द्र सक्सेना
संकलन सहयोगी
सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली
प्रसार शिक्षा निदेशालय
0151-2200505
email : deerajuvas@gmail.com

पत्रिका में प्रकाशित आलेख/विचार लेखकों के अपने हैं।

बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवार्थ

सेवा में

.....

.....

.....

स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, राजुवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. (डॉ.) आर.के. धूड़िया द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर, राजस्थान से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, बिजेय भवन पैलेस, राजुवास, बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. (डॉ.) आर.के. धूड़िया

पशुचिकित्सा व पशु विज्ञान की जानकारी प्राप्त करने के लिए राजुवास के टोल फ्री नम्बर पर सम्पर्क करें। 1800 180 6224